ऋषभायण महाकाव्य पर संगोष्ठी का आयोजन

सत्यं, शिवं, सुन्दरम की अनुभूति कराने वाला महाग्रंथ है ऋषभायण

लाडनूं 10 अक्टूबर।

महान दार्शनिक आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा भगवान ऋषभ के जीवन चरित्र पर रचित ऋषभायण महाकाव्य पर जैन विश्व भारती स्थित अहिंसा भवन में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में युवाचार्यश्री महाश्रमण, साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा, साध्वीश्री विश्रुतविभा सहित अनेक मुनियों, साध्वियों, समणियों सहित देश के बहुचर्चित कवि बलदेव वंशी, शेरजंग गर्ग, लक्ष्मी शंकर वाजपेयी, नरेश शांडिल्य, शशिकांत, ममता वाजपेयी, अनिल गोयल, राजेश चेतन, चिराग जैन एवं जयपुर के सुप्रसिद्ध साहित्यकार राजेश व्यास, शहर काजी सहित अनेक विद्वानों ने शिरकत की।

इस संगोष्ठी में कवियों ने ऋषभायण महाकाव्य को सत्यं, शिवं, सुन्दरम, की अनुभूति कराने वाला महाकाव्य बताया तो साहित्यकारों ने जीवन दर्शन को गहराई से समझाने वाला एवं वर्तमान समस्याओं का समाधान बताने वाला महाकाव्य बताया।

संगोष्ठी को संबोधित करते हुए ऋषभायण महाकाव्य के रचनाकार आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि ऋषभायण महाकाव्य के सत्र में शासक वर्ग की अर्हताओं का वर्णन किया गया है। उन अर्हताओं से युक्त पंक्तियों को हिन्दुस्तान के शासक वर्ग को श्रवण कराया जाये और उस बोध को शासक वर्ग धारण करे तो देश का कायाकल्प हो सकता है। आचार्यवर ने कहा कि देश की जनता से निग्रह शक्ति को उधार लेने वाला शासक अगर उस उधार को वह भूल जाता है तो वह कभी खिल नहीं सकता और सफल नहीं हो सकता। जो शासक जितेन्द्रिय नहीं होता वह कभी न्याय नहीं कर सकता। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि इस महाकाव्य में चिरंतन सत्य एवं सामयिक सत्य दोनों के दर्शन होते हैं।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कवि शेरजंग गर्ग ने कहा कि 25 वर्षों तक किसी भी कवि ने महाकाव्य नहीं लिखा। अब आचार्य महाप्रज्ञ ने ऋषभायण महाकाव्य की रचना कर नये इतिहास का सर्जन किया है। उन्होंने कहा कि साहित्य का नोबल पुरस्कार केवल रविन्द्रनाथ टेगौर को ही मिला है। अब इस देश के एक और कवि को साहित्य का नोबल पुरस्कार मिलना चाहिए और वे कवि हैं आचार्य महाप्रज्ञ। इनके द्वारा रचित यह महाकाव्य अपनी लंबी यात्रा तय करेगा। मुज़्य वक्ता बलदेव वंशी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ऐसे महान कवि एवं दार्शनिक है कि इनके सान्निध्य में पूरा देश खड़ा हो सकता है। उन्होंने कहा कि संत नहीं होते तो यह संसार जल जाता। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ जैसे महान संतों ने ही इस संसार को जलने से बचाया है।

संगोष्ठी में जयपुर के प्रसिद्ध साहित्यकार राजेश व्यास ने ऋषभायण महाकाव्य को जीवन दर्शन के गूढ रहस्यों को समझाने वाला महाकाव्य बताते हुए कहा कि ऋषभायण महाकाव्य में ऐसे सुत्र प्रदान किये गये हैं जो वर्तमान की समस्याओं का समाधान करने के साथ व्यक्ति को व्यक्ति से, व्यक्ति को समाज से जोड़ते हैं। लक्ष्मीशंकर वाजपेयी ने कहा कि ऋषभायण महाकाव्य ऐसे समय में आया है जब समाज से लेकर राजनीतिक साहित्य जगत तक में प्रदूषण फैला हुआ है। इस प्रदुषण को समाप्त करने में यह महाकाव्य अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। नरेश शांडिल्य ने इस महाकाव्य को जाति, सज्प्रदाय देश की सीमा से परे दिग-दिगन्त तक फैलने वाला महाकाव्य बताया। इस संगोष्ठी के कल्पनाकार कवि राजेश चैतन ने परिचय प्रस्तुत किया एवं संगोष्ठी का संचालन युवा उभरते हुए कवि चिराग जैन ने किया। संगोष्ठी को सफल बनाने में प्रो. बच्छराज दूगड़, इन्द्र बैंगानी का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा।

लाडनूं 10 अक्टूबर।
ऋषभायण परिचर्चा एवं काव्य गोष्ठी में मंचस्थ कवि व विद्वान।

लाडनूं 10 अक्टूबर।
ऋषभायण परिचर्चा एवं काव्य गोष्ठी में उपस्थित संभागी।

लाडनूं 10 अक्टूबर।
ऋषभायण परिचर्चा एवं काव्य गोष्ठी में उपस्थित संभागी।